कृष्ण कुमार 'कनक'

गज़ल - 1

जब से जल हम बहाने लगे हैं।
गम स्वयं मुस्कराने लगे हैं।
इस तरह ये हुआ है खुलासा,
स्वप्न भी छटपटाने लगे हैं।
इतना गहरा हुआ भूमि का जल
होश सबके ठिकाने लगे हैं।
घर के खाली पड़े हैं घड़े भी
लोग छूकर नहाने लगे हैं।
एक दिन था कि टोंटी खुली थी
आज टोंटी हिलाने लगे हैं।
किस तरह हो सकेगा गुजारा
लोग बैठक बुलाने लगे हैं।
रो रहा था कुँआ देखकर ये
लोग मिट्टी गिराने लगे हैं।
सूखती एक नदी ने कहा था
मौत में भी जमाने लगे हैं।
लो 'कनक' तुम संभालो ये किश्ती
वो अवाजें लगाने लगे हैं।

गज़ल - 2

मुझे मालूम था मजबूरियों का हल नहीं होगा।
नदी खाली पड़ी होगी कहीं भी जल नहीं होगा।
जहाँ के लोग मापेंगे जमीं से आसमाँ लेकिन,
यहाँ इंसान के हिस्से में केवल नल नहीं होगा।
जहाँ भी घूमना है घूमिये सब है जमीं अपनी
न जंगल ही मिलेंगे और अब दलदल नहीं होगा।
जिसे पुरखे हमें वरदान ईश्वर का बताते थे,
अगर ये मिट गया फिर हमसे कोई छल नहीं होगा।
बिना जल के हमारी जिंदगी की कल्पना सोचो
अगर ये जल नहीं होगा हमारा कल नहीं होगा।
अभी भी है समय सोचो विचारो वंशजों मनु के
अगर बीता समय फिर सोचने को पल नहीं होगा।
सियासत से निकल कर भी जमीं की ओर देखो तुम,
बिना जल के जमाने में कहीं संबल नहीं होगा।
'कनक' क्या चाँद तारों को निगल कर रात काटोगे,
तुम्हारी दुर्दशा का दूसरा प्रतिफल नहीं होगा।

गज़ल - 3

एक वादा निभाना पड़ेगा।
बस तुम्हें मुस्कराना पड़ेगा।
रूठ कर जा रही है नदी जो,
उस नदी को मनाना पड़ेगा।
व्यर्थ जल बिन्दु भू पर न छलके,
बस यही प्रण उठाना पड़ेगा।
एक बादल घिरे आसमां पर
उसको दिल से बुलाना पड़ेगा।
जो न हो काम जल का हितैषी,
दूर उसको हटाना पड़ेगा।
कर्ज जो स्वाँस पर जिन्दगी का
एक दिन तो चुकाना पड़ेगा।
दूर होने लगा है वो हम से
पास हमको ही आना पड़ेगा।
जिन्दगी जल का ही जल जला है
दीप फिर ये जलाना पड़ेगा।
दर्द जल के हृदय से चुराकर
गीत में गुन-गुनाना पड़ेगा।

गीत

आँख तरसेगी बूँद बूँद जल के लिए।
सोचना आज ही होगा हमें निज कल के लिए।
न नदी में न सदी में न मयकदी में मिले।
ऐसे हालात हैं जल नेकी वदी में न मिले।
चैन होगा न तन जिगर में एक पल के लिए।
आज गंगा है गटर में या गटर में है यही।
पाप धो देगी हमारे ये कल्पना न सही।
जमीं पे आई थी गंगा क्या सिर्फ मल के लिए।
है यही वक्त सही यूँ न गुजर जाने दो।
गम के पानी को इस तरह न उतर जाने दो।
ये तो इक हादसा है रोते हुए नल के लिए।
अपने बच्चों को जल का मूल्य बताओ यारो।
आइना बनके सही राह दिखाओ यारो।

अन्यथा होगी नई पौध विकल फल के लिए।
अब तो जागो भी सही ठौर मुहर आने दो।
मेरे भारत की ये तस्वीर बदल जाने दो।
अभी बाकी हैं कई प्रश्न सही हल के लिए।
एक मुद्दत हुई न अभी संभल पाये तो।
जहर सच्चाई का सारा न निगल पाये तो।
बन्द पलकें न कर सकोगे 'कनक' छल के लिए

मुक्तक

आदमी तुम आज क्यों हैरान हो।
क्या हृदय के द्वन्द का मैदान हो।
हाँ मुझे मालूम है तेरी व्यथा,
मैं नदी हूँ और तुम वीरान हो।
दर्द से पाटी गई है जिन्दगी।
व्यर्थ परिपाटी गई है जिन्दगी।
एक दिन जल के न मिलने पर 'कनक'
किस तरह काटी गई है जिन्दगी।
या खुदा घातें न कर।
तुम हता रातें न कर।
आँख का जल छीन मत,
बेरूखी बातें न कर।
गौरव बन अभिमान न बन।
गीता याकि कुरान न बन।
तू तो जल की चिन्ता कर,
बन्दा बन भगवान न बन।
रात अभी भी जारी है।
सपनों की बीमारी है।
नल में जल का नाम नहीं,
कैसी मारा-मारी है।
डिब्बी भर या डब्बा भर।

ताऊ भर या अब्बा भर।
सोच समझ कर नल पर आ,
चच्चा भर या अब्बा भर।
बूँद भूमि पर व्यर्थ न कर।
मेरे यार अनर्थ न कर।
जल ही जीवन साथी है,
जल का दर्द समर्थ न कर।
पहले चिन्ता जल की हो।
समय बचे तब कल की हो।
और बचे तो नल की हो,
फिर पूरे जंगल की हो।

कविता

विघ्न बाधा से भरा वह
पंथ का निर्लिप्त पंथी
खोजता था आँसुओं में
प्यास की संचित तृषा को
भटकता नभ तारकों सा
जगत को आलोक देकर
स्वयं की छत के सरीखे
बिम्ब पाने को धरा पर
किन्तु सहसा रूक गए वे
कदम आकुल अनमने से

फिर जिन्दगी देगा बता तो
मौत से लड़ कर स्वयं की
जिन्दगी के दरमयां मैं
सो सकूंगा चैन से भी
पर न मेरा मन भरेगा
दूर तुम से दूर होकर
रे मनुज तू क्यों मुझे
कर दूर दूभर जिन्दगी
खुद की बनाता है न जाने क्या
हुआ है बुद्धि को तेरी
अक्ल मारी गई क्या सोच

श्रव्य की ध्वनि शून्य में भी
उस नदी के मध्य छिटकी
नालियों या धमनिकाओं
या कि मछली जाल जैसी
सूक्ष्म धागों सी विमायें
चित्र की उस तूलिका पर
छटपटाती दृष्टि आभा
से लदी उस जल विभा ने
प्रश्न फेंका था उठाकर
धूल के सूखे कणों पर
आदमी क्या तू मुझे
मैं अब तक तुझे भूला नहीं हूँ
विश्व के भ्रम जाल में झूला नहीं हूँ
'जल' हूँ इस बात पर फूला नहीं हूँ।

संपर्क करें:
कृष्ण कुमार 'कनक'
गाँव व पोस्ट गुँदाऊ ठार मुरली नगर
थाना लाइन पार, फिरोजाबाद
उत्तर प्रदेश - 283 203
मो.न. 09259648428
ईमेल : kanakkavya@gmail.com